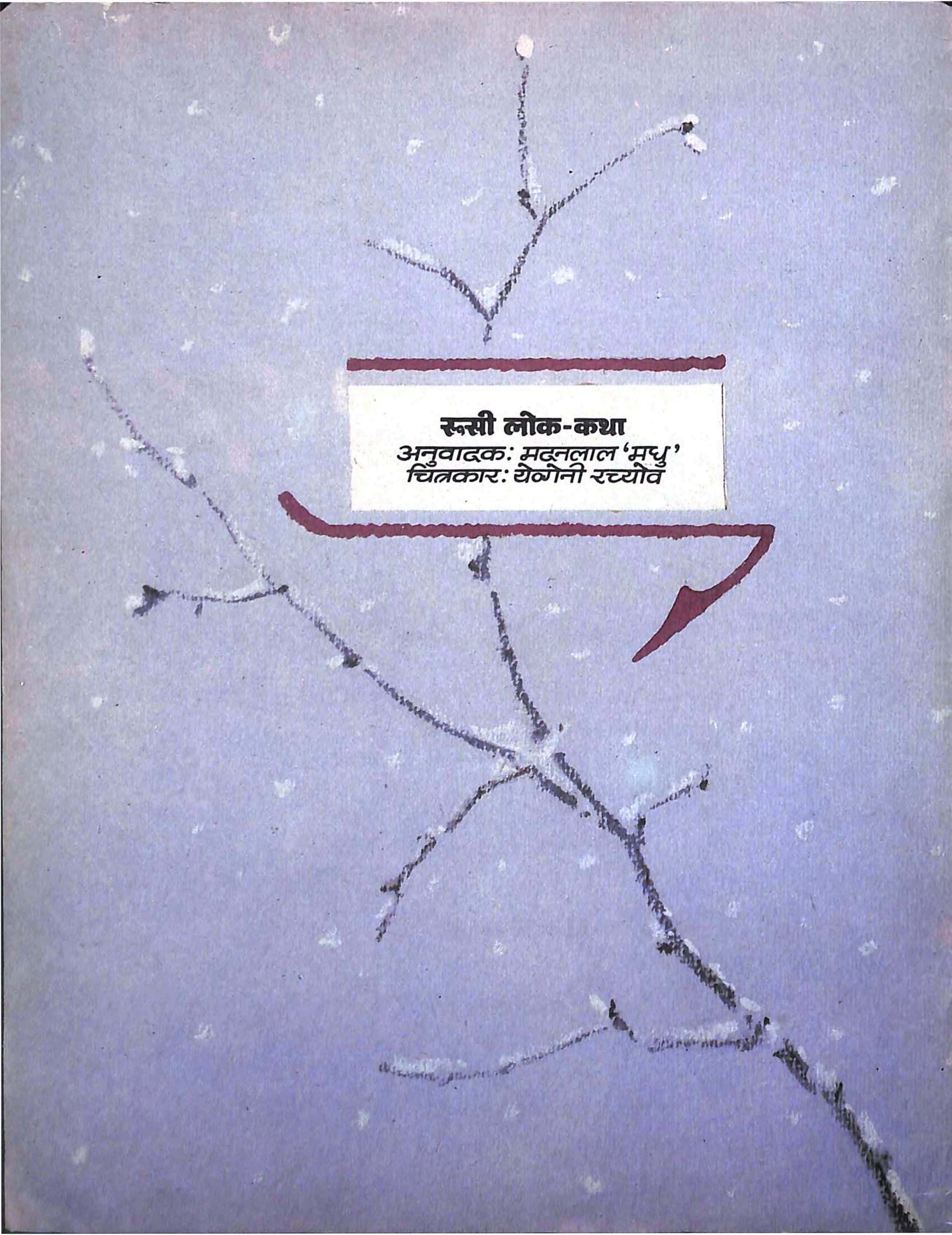
लोमड़ी और ख़रगोश



रादुगा प्रकाशन · मास्को



रूसी लोक-कथा

अनुवादक: मदनलाल 'मधु'

चित्रकार: येव्गेनी रच्योव



कभी एक भूरा ख़रगोश किसी मैदान में रहता था।

एक लोमड़ी भी वहीं रहती थी।

जैसे ही पाला पड़ने लगा, वैसे ही ख़रगोश रोयें बदलने लगा। जैसे ही बर्फ़ीले तूफ़ानों और बर्फ़ के ढेरों वाला ठंडा जाड़ा आया, ठंड के मारे वह तो बिल्कुल सफ़ेद ही हो गया और उसने अपने लिए झोंपड़ी बनाने की सोची। उसने खपचियां जमा कीं और लगा झोंपड़ी बनाने। लोमड़ी ने यह देखा, तो बोली –

"अरे भेंगे, तुम यह क्या कर रहे हो?"

"देख तो रही हो कि ठंड से बचने के लिए झोंपड़ी बना रहा हूं।"

"अरे वाह, कितना समझदार है," लोमड़ी ने सोचा। "मैं भी अपने लिए घर क्यों न बना लूं? मगर खपचियों का नहीं, सुन्दर, बिल्लौरी महल!"



बस वह बर्फ़ ला लाकर घर बनाने लगी।

दोनों घर एकसाथ ही बनकर तैयार हो गये और हमारे ये दोनों जानवर उनमें रहने लगे।

लोमड़ी बर्फ़ की झोंपड़ी में से झांकती और ख़रगोश का मज़ाक़ उड़ाती हुई कहती –

"अरे, भोंदू, क्या भद्दी झोंपड़ी बनायी है तुमने! ज़रा मेरे घर को तो देखो – कैसा साफ़-सुथरा और रोशन है! कोई बराबरी हो सकती है मेरे बिल्लौरी महल की?"

जाड़े में तो लोमड़ी के मज़े रहे, मगर जैसे ही जाड़े के बाद वसन्त आया, तो बर्फ़ पिघलने लगी, ज़मीन गर्म होने लगी। अब क्या था, लोमड़ी का महल भी पानी बनकर पहाड़ी से नीचे बह गया। घर के बिना लोमड़ी कैसे रहे? वह इस घात में बैठ गयी कि कब ख़रगोश घूमने के लिए, घास-पत्ते खाने के लिए झोंपड़ी से बाहर निकलता है। उसके बाहर निकलते ही वह चुपके से झोंपड़ी में घुस गयी और मज़े से लेट गई।

ख़रगोश लौटा, उसने दरवाज़े को धकेला तो उसे बन्द पाया। कुछ रुककर वह फिर से दरवाज़े पर ठक-ठक करने लगा।

"कौन है?" लोमड़ी भारी-भरकम आवाज़ में चिल्लायी।

"यह मैं हूं, घर का मालिक, भूरा ख़रगोश। मुझे अन्दर आ जाने दो, लोमड़ी।"

"भागो यहां से, नहीं आने दूंगी," लोमड़ी ने जवाब दिया।

ख़रगोश थोड़ी देर रुका और फिर बोला—

"लोमड़ी, बस काफ़ी मज़ाक़ हो चुका। मुझे अन्दर आने दो, नींद आ रही है।"

मगर लोमड़ी ने जवाब दिया—

"ज़रा ठहरो तो, अभी जो उठूंगी और बाहर आऊंगी, तो ऐसे धुनूंगी तुम्हें कि रोयें ही हवा में उड़ते नज़र आयेंगे!"

ख़रगोश रो पड़ा और जिधर उसके पांव ले गये, उधर ही चल दिया। रास्ते में उसे भूरा भेड़िया मिला।

"नमस्ते, ख़रगोश, किसलिए रोते हो, किसलिए दुःखी होते हो?"

"भला मैं कैसे न रोऊं, कैसे दुःखी न होऊं—मेरी खपचियों की झोंपड़ी थी और लोमड़ी की बर्फ़ की। लोमड़ी की झोंपड़ी पिघल गयी, पानी बनकर बह गयी। उसने मेरी झोंपड़ी





पर क़ब्ज़ा कर लिया। अब वह मुझे, घर के मालिक को ही अन्दर नहीं जाने देती!"

"तो सुनो," भेड़िया बोला, "हम अभी उसे निकाल बाहर करते हैं!"

"शायद ही हम उसे निकाल सकेंगे, भेड़िये, वह तो ख़ूब जमकर वहां बैठ गयी है!"

"अगर लोमड़ी को निकाल न दूं, तो अपने बाप का बेटा नहीं!" भेड़िया चिल्लाया।

ख़रगोश ख़ुश हुआ और भेड़िये के साथ लोमड़ी को अपनी झोंपड़ी से खदेड़ने चल दिया। वे वहां पहुंचे।

"ए मौसी लोमड़ी, परायी झोंपड़ी से निकल जाओ!" भेड़िया चिल्लाया।

मगर लोमड़ी ने झोंपड़ी में से यह जवाब दिया—





“ज़रा ठहरो तो, अभी जो तन्दूर से उतरूंगी और बाहर आऊंगी, तो ऐसे धुनूंगी तुम्हें कि रोयें ही हवा में उड़ते नज़र आयेंगे!”

“अरे, बाप रे! कैसी ग़ुस्सैल है!” भेड़िया बड़बड़ाया और दुम दबाकर जंगल में भाग गया। ख़रगोश ही मैदान में रोता हुआ रह गया।

इतने में सांड़ इधर से गुज़रा।

“नमस्ते, ख़रगोश, किसलिए रोते हो, किसलिए दुःखी होते हो?”

“भला मैं कैसे न रोऊं, कैसे दुःखी न होऊं—मेरी खपचियों की झोंपड़ी थी और लोमड़ी की बर्फ़ की। लोमड़ी की झोंपड़ी पिघल गयी और उसने मेरी झोंपड़ी पर क़ब्ज़ा कर लिया। अब वह मुझे, घर के मालिक को ही अन्दर नहीं जाने देती!”

“तो सुनो,” सांड़ बोला, “हम अभी उसे निकाल बाहर करते हैं!”

“नहीं, सांड़, शायद ही हम उसे निकाल सकेंगे, वह तो ख़ूब जमकर वहां बैठ गयी है! भेड़िये ने उसे निकालना चाहा, नहीं निकाल सका। तुम, सांड़, उसे नहीं निकाल सकोगे!”

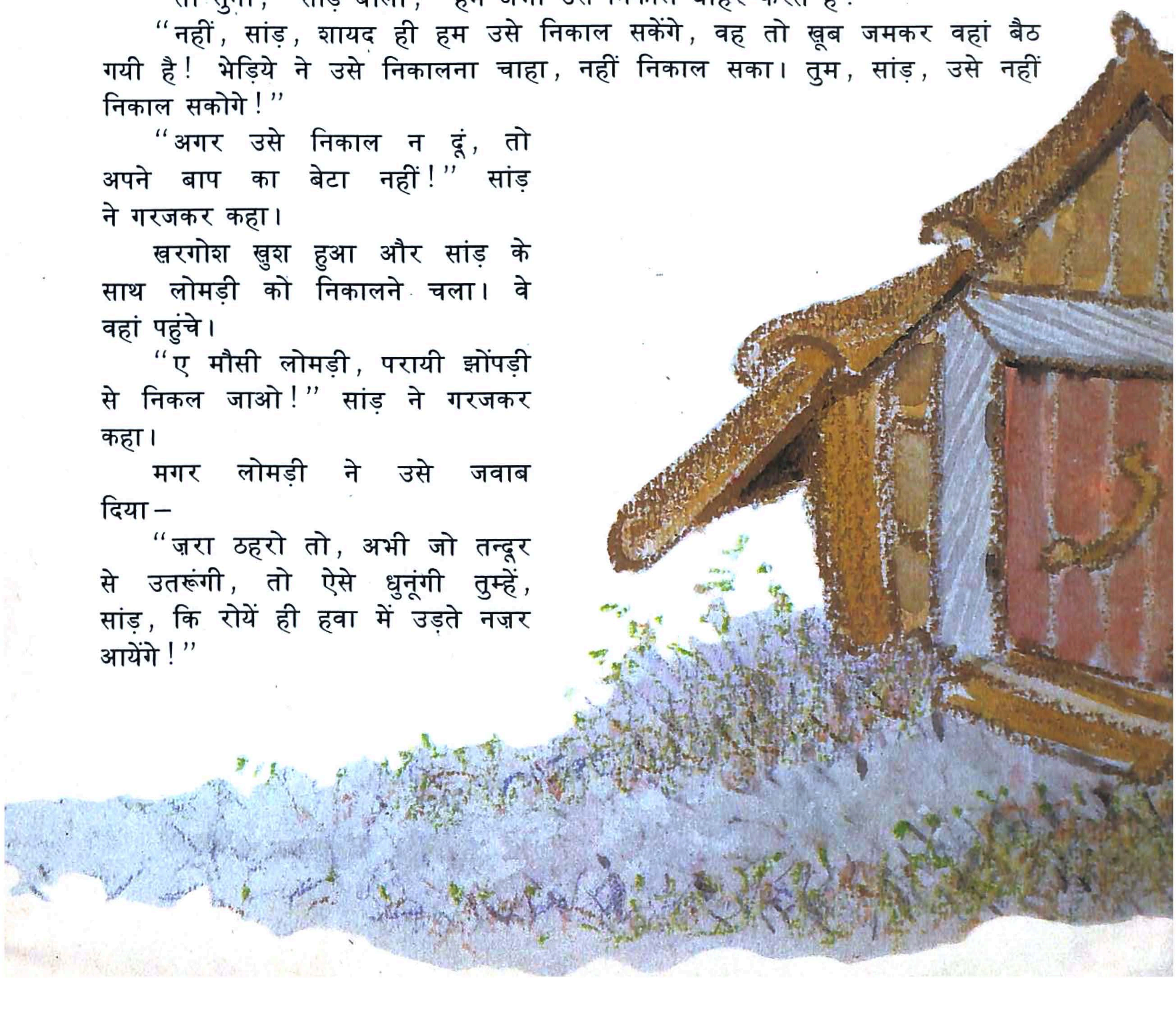
“अगर उसे निकाल न दूं, तो अपने बाप का बेटा नहीं!” सांड़ ने गरजकर कहा।

ख़रगोश ख़ुश हुआ और सांड़ के साथ लोमड़ी को निकालने चला। वे वहां पहुंचे।

“ए मौसी लोमड़ी, परायी झोंपड़ी से निकल जाओ!” सांड़ ने गरजकर कहा।

मगर लोमड़ी ने उसे जवाब दिया—

“ज़रा ठहरो तो, अभी जो तन्दूर से उतरूंगी, तो ऐसे धुनूंगी तुम्हें, सांड़, कि रोयें ही हवा में उड़ते नज़र आयेंगे!”





"अरे, बाप रे, कैसी गुस्सैल है!" सांड़ बोला, सिर पीछे की ओर किया और लगा भागने।

ख़रगोश टीले के पास बैठकर रोने लगा।

इसी वक़्त भालू वहां से गुज़रा और बोला –

"नमस्ते भेंगे, किसलिए रोते हो, किसलिए दुःखी होते हो?"

"भला मैं कैसे न रोऊं, कैसे दुःखी न होऊं – मेरी खपचियों की झोंपड़ी थी और लोमड़ी की बर्फ़ की। लोमड़ी की झोंपड़ी पिघल गई और उसने मेरी झोंपड़ी पर क़ब्ज़ा कर लिया। अब वह मुझे, घर के मालिक को ही अन्दर नहीं जाने देती!"

"तो सुनो," भालू बोला, "हम अभी उसे निकाल बाहर करते हैं!"

"नहीं, भालू, शायद ही हम उसे निकाल सकेंगे, वह तो ख़ूब जमकर वहां बैठ गयी है! भेड़िये ने उसे निकालना चाहा, नहीं निकाल सका। सांड़ ने निकालना चाहा, नहीं निकाल सका। तुम भी उसे नहीं निकाल सकोगे!"

"अगर लोमड़ी को निकाल न दूं, तो अपने बाप का बेटा नहीं!" भालू चिल्लाया।

ख़रगोश बड़ा ख़ुश हुआ और उछलता-कूदता हुआ लोमड़ी को निकालने के लिए भालू के साथ चल दिया। वे वहां पहुंचे।

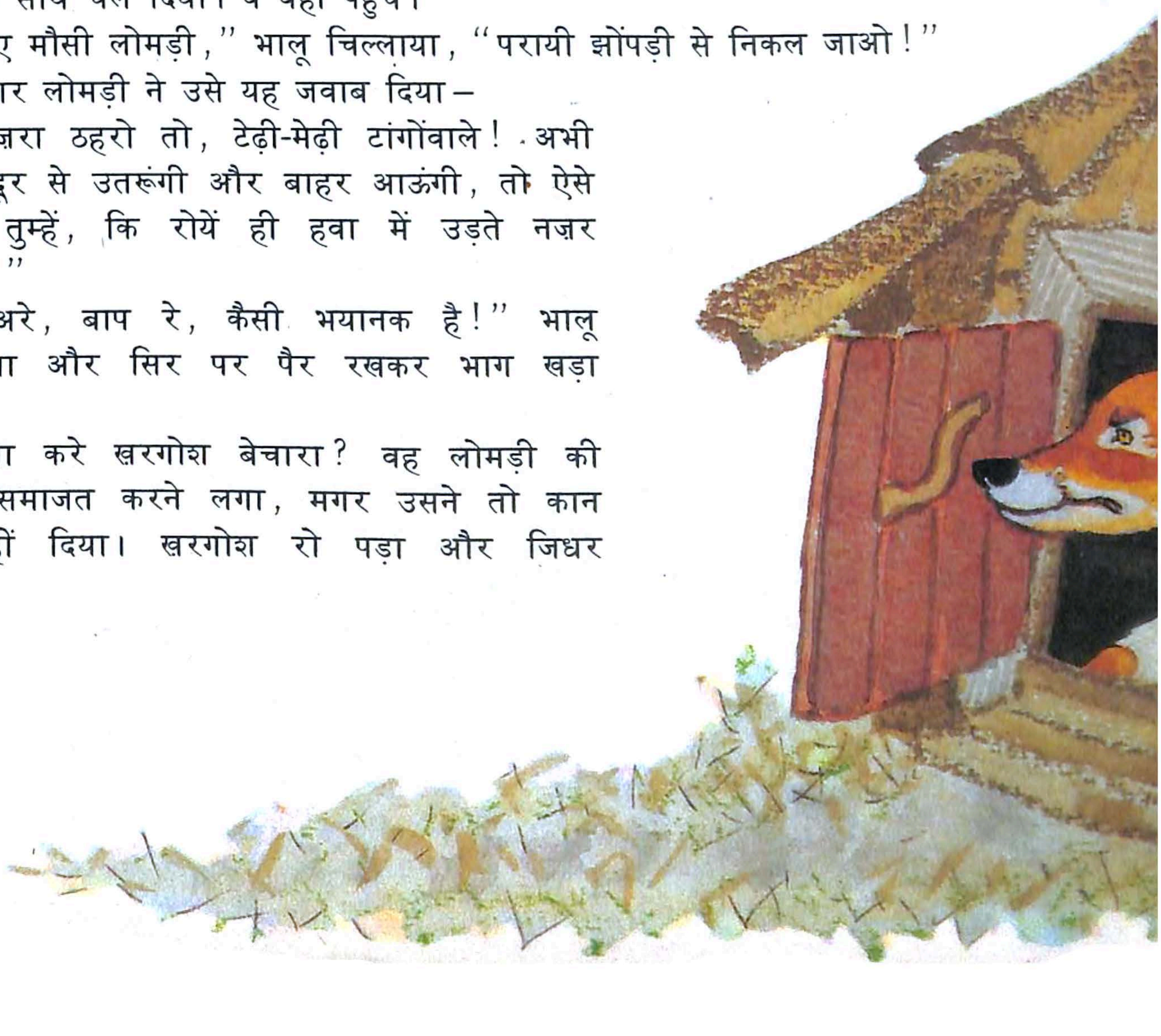
"ए मौसी लोमड़ी," भालू चिल्लाया, "परायी झोंपड़ी से निकल जाओ!"

मगर लोमड़ी ने उसे यह जवाब दिया –

"ज़रा ठहरो तो, टेढ़ी-मेढ़ी टांगोंवाले! अभी जो तन्दूर से उतरूंगी और बाहर आऊंगी, तो ऐसे धुनूंगी तुम्हें, कि रोयें ही हवा में उड़ते नज़र आयेंगे!"

"अरे, बाप रे, कैसी भयानक है!" भालू चिल्लाया और सिर पर पैर रखकर भाग खड़ा हुआ।

क्या करे ख़रगोश बेचारा? वह लोमड़ी की मिन्नत-समाजत करने लगा, मगर उसने तो कान ही नहीं दिया। ख़रगोश रो पड़ा और जिधर



उसके पांव ले गये, उधर ही चल दिया। वह चला जा रहा था कि रास्ते में कंधे पर तलवार रखे हुए लाल मुर्ग़े से उसकी मुलाक़ात हुई।

"नमस्ते, ख़रगोश, क्या हाल-चाल है? किसलिए रोते हो, किसलिए दुःखी होते हो?"

"भला मैं कैसे न रोऊं, कैसे दुःखी न होऊं – मेरी खपचियों की झोंपड़ी थी और लोमड़ी की बर्फ़ की। लोमड़ी की झोंपड़ी पिघल गयी, उसने मेरी झोंपड़ी पर क़ब्ज़ा कर लिया। अब वह मुझे, घर के मालिक को ही अन्दर नहीं जाने देती!"

"तो सुनो," मुर्ग़ा बोला, "हम अभी उसे निकाल बाहर करते हैं!"

"शायद ही तुम उसे निकाल सकोगे, मुर्ग़े, वह तो ख़ूब जमकर वहां बैठ गई है! भेड़िये ने उसे निकालना चाहा, नहीं निकाल सका, सांड़ ने कोशिश की, वह भी नाकाम रहा, भालू ने निकालना चाहा, वह भी न निकाल पाया, तुम उससे कैसे पार पा सकोगे?"

"कोशिश करते हैं," मुर्ग़ा बोला और लोमड़ी को निकालने के लिए ख़रगोश के साथ चल दिया। झोंपड़ी के पास पहुंचते ही मुर्ग़ा गाने लगा –

एड़ीवाले जूते पहने
कंधे पर तलवार उठाये
मुर्ग़ा बड़ी शान से आये।
करे लोमड़ी के वह टुकड़े
टोपी अपने लिए बनाये
भाग लोमड़ी, जान बचाये!

लोमड़ी ने जैसे ही मुर्ग़े की यह धमकी सुनी, वैसे ही उसका दम निकल गया और बोली –

"सुनहरी कलगीवाले, रेशमी दाढ़ीवाले, ज़रा ठहरो, प्यारे मुर्ग़े!"

और मुर्ग़ा चिल्लाया –

"कुकड़ूं-कूं, टुकड़े-टुकड़े मैं कर दूं!"

अब लोमड़ी बड़ी बारीक और मिसरी-सी घोलती आवाज़ में बोली –

"प्यारे मुर्ग़े, मेरी बुढ़ापे की हड्डियों पर रहम करो, फ़र कोट पहन लेने दो!"

मगर दरवाज़े के पास खड़ा हुआ मुर्ग़ा फिर से चिल्लाया –





एड़ीवाले जूते पहने
कंधे पर तलवार उठाये
मुर्ग़ा बड़ी शान से आये।
करे लोमड़ी के वह टुकड़े
टोपी अपने लिए बनाये
भाग लोमड़ी, जान बचाये!

लोमड़ी अब क्या करती, कोई चारा नहीं था उसके लिए। उसने दरवाज़ा खोला और जान लेकर भागी। ख़रगोश के साथ मुर्ग़ा भी उसकी झोंपड़ी में बस गया और लगे वे सुख-चैन से रहने, मौज मनाने और दौलत जुटाने।

И ЗАЯЦ

…родная сказка

…ыке хинди

…ND THE HARE

…ian folk tale

…●प्रगति प्रकाशन १९७३
…रादुगा प्रकाशन १९९०



रादुगा प्रकाशन · मास्को

राजस्थान पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा) लि.
चमेलीवाला मार्केट, एम. आई. रोड, जयपुर-302001

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५

Rs 5.00

ISBN 5-05-003227-x